शब्दावली - विश्वकोश, थिसोरस : परिचय और उपयोग

शब्दकोश (अन्य वर्तनी : शब्दकोष) : एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रंथ जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का सन्निवेश हो। शब्दकोश एकभाषीय हो सकते हैं, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है, जैसे - अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या आडियो संचिका के रूप में। कुछ शब्दकोशों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों के लिये अलग-अलग शब्दकोश हो सकते हैं, जैसे - विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधिक (कानूनी) शब्दकोश, गणित का शब्दकोश आदि।

सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। सही अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है। सही शब्द के चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक है। शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझ कर आरंभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखाजोखा रखना शुरू कर दिया था। इसके लिए उस ने कोश बनाना शुरू किया। कोश में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है।

शब्दकोश :

हमारे परिचित भाषाओं के कोशों में ओक्सफोर्ड-इंग्लिश-डिक्शनरी के परिशीलन में उपर्युक्त समस्त प्रवृत्तियों का उत्कृष्ट निदर्शन देखा जा सकता है। उसमें शब्दों के सही उच्चारण का संकेत-चिह्नों से विशुद्ध और परिनिष्ठित बोध भी कराया है। यूरोप के उन्नत और समृद्ध देशों की प्राय: सभी भाषाओं में विकसित स्तर की कोशविद्या के आधार पर उत्कृष्ट, विशाल, प्रमाणिक संपन्न कोशों का निर्माण हो चुका है और उन देशों में कोशनिर्माण के लिये ऐसे स्थायी संस्थान प्रतिष्ठापित किए जा चुके हैं जिनमें अबाध गति से सर्वदा कार्य चलता रहता है। लब्धप्रतिष्ठा और बड़े-बड़े विद्वानों का सहयोग तो उन संस्थानों को मिलता ही है, जागरूक जनता भी सहयोग देती है। अंग्रेजी डिक्शनरी तथा अन्य भाषाओं में निर्मित कोशकारों के रचना-विधान-मूलक वैशिष्टयों का अध्ययन करने से अद्यतन कोशों में निम्ननिर्दिष्ट बातों का अनुयोग आवश्यक लगता है-

(क) उच्चारणसूचक संकेतचिह्नों के माध्यम से शब्दों के स्वरों व्यंजनों का पूर्णत: शुद्ध और परिनिष्ठित उच्चारण स्वरूप बताना और स्वराघात बलागात का निर्देश करते हुए यथासंभव उच्चार्य अंश के अक्षरों की बद्धता और अबद्धता का परिचय देना,

(ख) व्याकरण संबंध उपयोगी और आवश्यक निर्देश देना,

(ग) शब्दों की इतिहास-संबंध वैज्ञानिक-व्युत्पत्ति प्रदर्शित करना,

(घ) परिवार-संबंध अथवा परिवारमुक्त निकट या दूर के शब्दों के साथ शब्दरूप और अर्थरूप का तुलनात्मक पक्ष उपस्थित करना,

(ङ) शब्दों के विभिन्न और पृथक्कृत नाना अर्थों को अधिक- न्यून प्रयोग क्रमानुसार सूचित करना।

(च) अप्रयुक्त - शब्दों अथवा शब्दप्रयोगों की विपोसूचना देना,

(छ) शब्दों के पर्याय बताना

(ज) संगत अर्थों के समर्थनार्थ उदाहरण देना,

(झ) चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों आदि के द्वारा अर्थ को अधिक स्पष्ट करना।

आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी का नव्यतम और बृहत्तम संस्करण आधुनिक कोशविद्या की प्राय: सभी विशेषताओं से संपन्न है। नागरीप्रचारिणी सभा के हिंदी शब्दसागर के अतिरिक्त हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाश्यमान मानक शब्दकोश एक विस्तृत आयास है। हिंदी कोशकला के लब्धप्रतिष्ठ संपादक रामचन्द्र वर्मा के

इस प्रशंसनीय कार्य का उपजीव्य भी मुख्यत: शब्दसागर ही है। उसका मूल कलेवर तात्विक रूप में शब्दसागर से ही अधिकांशत: परिफलित है। हिंदी के अन्य कोशों में भी अधिकांश सामग्री इसी कोश से ली गयी है। थोड़े -बहुत मुख्यत: संस्कृत कोशों से और यदा-कदा अन्यत्र से शब्दों और अर्थों को आवश्यक-अनावश्यक रूप में ठूँस दिया गया है। ज्ञानमंडल के बृहद् हिंदी शब्दकोश में पेटेवाली प्रणाली शुरू की गई है। परंतु वह पद्धति संस्कृत के कोशों में जिनका निर्माण पश्चिमी विद्वानों के प्रयास से आरंभ हुआ था, सैकड़ों वर्ष पूर्व से प्रचलित हो गई थी। पर आज भी, नव्य या आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोश उस स्तर तक नहीं पहुँचे पाए हैं जहाँ तक ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी अथवा रूसी, अमेरिकन, जर्मन, इताली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के उत्कृष्ट और अत्यंत विकसित कोश पहुँच चुके हैं। कोशरचना की ऊपर वर्णित विधा को हम साधारणत: सामान्य भाषा शब्दकोश कह सकते हैं। इस प्रकार शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी, त्रिभाषी और बहुभाषी भी होते हैं। बहुभाषी शब्दकोशों में तुलनात्मक शब्दकोश भी यूरोपीय भाषाओं में ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान की प्रौढ उपलब्धियों से प्रमाणीकृत रूप में निर्मित हो चुके हैं। इनमें मुख्य रूप से भाषावैज्ञानिक अनुशीलन और शोध के परिणामस्वरूप उपलब्ध सामग्री का नियोजन किया गया है। ऐसे तुलनात्मक कोश भी आज बन चुके हैं जिनमें प्राचीन भाषाओं की तुलना मिलती है। ऐसे भी कोश प्रकाशित हैं जिनमें एक से अधिक मूल परिवार की अनेक भाषाओं के शब्दों का तुलनात्मक परिशीलन किया गया है।

शब्दकोशों के नाना रूप :

शब्दकोशों के और भी नाना रूप आज विकसित हो चुके हैं और हो रहे हैं। वैज्ञानिक और शास्त्रीय विषयों के सामूहिक और तत्संबंधी विषय के अनुसार शब्दकोश भी आज सभी समृद्ध भाषाओं में बनते जा रहे हैं। शास्त्रों और विज्ञानशाखाओं के पारिभाषिक शब्दकोश भी निर्मित हो चुके हैं और हो रहे हैं। इन शब्दकोशों की रचना एक भाषा में भी होती है और दो या अनेक भाषाओं में भी। कुछ में केवल पर्याय शब्द रहते हैं और कुछ में व्याख्याएँ अथवा परिभाषाएँ भी दी जाती हैं। विज्ञान और तकनीकी या प्रविधिक विषयों से संबद्ध नाना पारिभाषिक शब्दकोशों में व्याख्यात्मक परिभाषाओं तथा कभी-कभी अन्य साधनों की सहायता से भी बिलकुल सही अर्थ का बोध कराया जाता हैं। दर्शन, भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान और समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि समस्त आधुनिक विद्याओं के कोश विश्व की विविध संपन्न भाषाओं में विशेषज्ञों की सहायता से बनाए जा रहे हैं और इस प्रकृति के सैकड़ों-हजारों कोश भी बन चुके हैं। शब्दार्थ कोश संबंधी प्रकृति के अतिरिक्त इनमें ज्ञानकोशात्मक तत्त्वों की विस्तृत या लघुव्याख्याएँ भी संमिश्रित रहती है। प्राचीन शास्त्रों और दर्शनों आदि के विशिष्ट एवं पारिभाषिक शब्दों के कोश भी बने हैं और बनाए जा रहे हैं। अनेक अतिरिक्त एक-एक ग्रंथ के शब्दार्थ कोश (यथा-मानस शब्दावली) और एक-एक लेखक के साहित्य की शब्दावली भी युरोप, अमेरिका और भारत आदि में संकलित हो रही है। इनमें उच्च कोटि के कोशकारों ने ग्रंथसंदर्भों के संस्करणात्मक संकेत भी दिए हैं। अकारादि वर्णानुसारी अनुक्रमणिकात्मक उन शब्दसूचियों का- जिनके अर्थ नहीं दिए जाते हैं पर संदर्भ संकेत रहता है- यहाँ उल्लेख आवश्यक नहीं है। यूरोप और इंग्लैंड में ऐसी शब्दसूचियाँ अनेक बनीं। शेक्सपियर द्वारा प्रयुक्त शब्दों की ऐसी अनुक्रमणिका परम प्रसिद्ध है। वैदिक शब्दों की और ऋक्संहिता में प्रयुक्त पदों की ऐसी शब्दसूचियों के अनेक संकलन पहले ही बन चुके हैं। व्याकरण महाभाष्य की भी एक एक ऐसी शब्दानुक्रमणिका प्रकाशित है। परंतु इनमें अर्थ न होने के कारण यहाँ उनका विवेचन नहीं किया जा रहा है।

ज्ञानकोश :

कोश की एक दूसरी विद्या ज्ञानकोश भी विकसित हुई है। इसके बृहत्तम और उत्कष्ट रूप को इन्साइक्लोपीडिया कहा गया है। हिंदी में इसके लिये विश्वकोश शब्द प्रयुक्त और गृहीत हो गया है। यह शब्द बांग्ला विश्वकोशकार ने कदाचित् सर्वप्रथम बँगाल के ज्ञानकोश के लिये प्रयुक्त किया। उसका एक हिंदी संस्करण हिंदी विश्वकोश के नाम से नए सिरे से प्रकाशित हुआ। हिंदी में वह शब्द प्रयुक्त होने लगा है। यद्यपि हिंदी

के प्रथम किशोरोपयोगी ज्ञानकोश (अपूर्ण) को श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा पं. कृष्ण वल्लभ द्विवेदी द्वारा विश्वभारती अभिधान दिया गया तो भी ज्ञान कोश, ज्ञानदीपिका, विश्वदर्शन, विश्वविद्यालय भंडार आदि संज्ञाओं का प्रयोग भी ज्ञानकोश के लिये हुआ है। स्वयं सरकार भी बालशिक्षोपयोगी ज्ञानकोशात्मक ग्रंथ का प्रकाशन ज्ञानसरोवर नाम से कर रही है। परंतु इन्साइक्लोपीडिया के अनुवाद रूप में विश्वकोश शब्द ही प्रचलित हो गया। उड़िया के एक विश्वकोश का नाम शब्दार्थानुवाद के अनुसार ज्ञान मंडल रखा भी गया। ऐसा लगता है कि बृहद् परिवेश के व्यापक ज्ञान का परिभाषिक और विशिष्ट शब्दों के माध्यम से ज्ञान देनेवाले ग्रंथ का इन्साइक्लोपीडिया या विश्वकोश अभिधान निर्धारित हुआ और अपेक्षाकृत लघुतर कोशों को ज्ञानकोश आदि विभिन्न नाम दिए गए। अंग्रेजी आदि भाषाओं में बुक आफ नालेज, डिक्शनरी और जनरल नालेज आदि शीर्षकों के अंतर्गत नाना प्रकार के छोटे बड़े विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश बने हैं और आज भी निरंतर प्रकाशित एवं विकसित होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं इन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजन ऐंड एथिक्स आदि विषयविशेष से संबंद्ध विश्वकोशों की संख्या भी बहुत ही बड़ी है। अंग्रेजी आदि भाषाओं में बुक आफ नालेज, डिक्शनरी आव जनरल नालेज आदि शीर्षकों के अंतरेगत नाना प्रकार के छोटे बडे विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश बने हैं और आज भी निरंतर प्रकाशित एवं विकसित होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं इन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजन ऐंड एथिक्स आदि विषयविशेष से संबंद्ध विश्वकोशों की संख्या भी बहुत ही बड़ी है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से निर्मित अनेक सामान्य विश्वकोश और विशेष विश्वकोश भी आज उपलब्ध हैं।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना अंग्रेजी के ऐसे विश्वकोश हैं। अंग्रेजी के सामान्य विश्वकोशों द्वारा इनकी प्रमाणिकता और सामान्यतः सर्वस्वीकृत हैं। निरंतर इनके संशोधित, संवर्धित तथा परिष्कृत संस्करण निकलते रहते हैं। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के दो परिशिष्ट ग्रंथ भी हैं जो प्रकाशित होते रहते हैं और जो नूतन संस्करण की सामग्री के रूप में सातत्य भाव से संकलित होते रहते हैं। इंग्लैंड में इन्साइक्लोपीडिया के पहले से ही ज्ञानकोशात्मक कोशों के नाना रूप बनने लगे थे।

ज्ञानकोशों के नाना प्रकार :

ज्ञानकोशों के भी इतने अधिक प्रकार और पद्धतियाँ हैं जिनकी चर्चा का यहाँ अवसर नहीं है। चरितकोश, कथाकोश, इतिहासकोश, ऐतिहासिक कालकोश, जीवनचरितकोश पुराख्यानकोश, पौराणिक-ख्यातपुरुषकोश आदि आदि प्रकार के विविध नामरूपात्मक ज्ञानकोशों की बहुत सी विधाएँ विकसित और प्रचलित हो चुकी हैं। यहाँ प्रसंगत: ज्ञानकोशों का संकेतात्मक नामनिर्देश मात्र कर दिया जा रहा है। हम इस प्रसंग को यहीं समाप्त करते हैं और शब्दार्थकोश से संबंद्ध प्रकृत विषय की चर्चा पर लौट आते हैं।

विश्वकोश :

अंग्रेजी भाषा में बुक ओफ नोलेज, 'डिक्शनरी ओफ जनरल नोलेज' आदि नामों से अनेक प्रकार के छोटे-बड़े विश्वकोश छपे हैं। यहाँ तक कि अब इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स, इन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिस्ट्री आदि प्रकार के विश्वकोशों का बहुत ज्यादा प्रकाशन हो रहा है, जिनमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों की विस्तृत व्याख्या-परिभाषा आदि सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाए संकलित की गई हैं। अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार के अनेक सामान्य और विशेष विश्वकोश आजकल उपलब्ध हैं। हिन्दी में भी अंग्रेजी के तर्ज पर अनेक रूपों एवं आकारों में विश्वकोशों का प्रकाशन हुआ है। इन्हें इतिहास कोश, चरित कोश, कथाकोश, पुराख्यानकोश आदि शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित किया गया है। जनसंचार माध्यमों के तीव्र विकास ने जहाँ कोशों के प्रचलित स्वरूप में बुनियादी परिवर्तन ला दिया है, वहीं इन क्षेत्रों में प्रयुक्त नई शब्दावली को केन्द्रित करके कई विश्वकोश भी प्रकाशित किए गए हैं। जैसे- अशोक गुप्त द्वारा निर्मित हिन्दी पत्रकारिता संदर्भ कोश, डॉ. रामप्रकाश और डॉ. सुधीन्द्र कुमार के संयुक्त संपादन में संकलित पत्रकारिता संदर्भ कोश, विष्णु पंकज द्वारा संपादित साक्षात्कार कोश, प्रताप नारायण टंडन का बृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश आदि। प्रो. रमेश जैन द्वारा संपादित एवं नेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित जनसंचार विश्वकोश ऐसा ही कोश है, जिसे हिन्दी का पहला जनसंचार कोश माना जाता है। इसमें जनसंचार क्षेत्र से जुड़ी विविध विधाओं के पारिभाषिक शब्दों का शोधपूर्ण एवं तथ्यात्मक विवेचन

किया गया है। इस कोश में शब्दों को निम्नलिखित प्रकार से संकलित किया गया है-

'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका', 'एन्साइक्लोपीडिया इन्कार्टा' एवं 'एन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना' आदि ऐसे ही बहुचर्चित विश्वकोश हैं, जिनका कई खण्डों में प्रकाशन हुआ है। इनकी विशद लोकप्रियता एवं ज्ञानवर्धक उपयोगिता से बेहद प्रभावित होकर सबसे पहले भारतीय कोशकार डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु ने कई वर्षों के अथक प्रयास से पच्चीस खण्डों में विभाजित 'हिन्दी विश्वकोश' का निर्माण एवं प्रकाशन किया। तदन्तर डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, भगवतशरण उपाध्याय आदि विद्वानों के संयुक्त परिश्रम से बारह खण्डों में विभाजित एक अन्य 'हिन्दी विश्वकोश' का प्रकाशन भी हुआ।

आपके मन में यह प्रश्न जरूर उठ रहा होगा कि शब्दकोश और विश्वकोश में क्या अंतर है? दरअसल सामान्य शब्दकोश के केन्द्र में शब्द होते हैं, किन्तु विश्वकोश के केन्द्र में विषय का पूर्ण-विवेचन निहित होता है। यही कारण है कि विश्वकोश में संसार के सभी मुख्य विषयों पर विस्तृत लेख, उनके ऐतिहासिक विवरण, प्रयोग गुण-दोष आदि का विशद्-विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त उस विषय से जुड़े दृष्टांत, उद्धरण, पृष्ठभूमि तथा चित्रादि भी प्रस्तुत किए जाते हैं, ताकि विषय को पूर्णतः स्पष्ट किया जा सके। इस प्रकार विश्वकोश में किसी विषय, वस्तु आदि की प्रकृति, निर्माण-प्रक्रिया, प्रयोग, विधि, शक्ति, स्वरूप आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। जबकि शब्दकोश में शब्दों के उच्चारण, वर्तनी, व्युत्पत्ति, व्याकरणिक-रूप, वर्ण-परिवर्तन, रूप-भेद, अर्थ, व्याख्या, पर्याय, प्रयोग आदि को स्पष्ट किया जाता है।

परिचय और उपयोग :

शब्दों के संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी, जैसे हिज्जे, अर्थ, उच्चारण, उत्पत्ति आदि के लिए प्रधान सूत्र और साधन शब्दकोश ही होते हैं। विश्वकोश से शब्दकोश इस अर्थ में भिन्न होता है कि विश्वकोश में किसी वस्तु के विषय में जानकारी दी होती है। आधुनिक बृहद शब्दकोशों की यह भी एक विशेषता मानी जाती है कि वे शब्द के बारे में तो सूचित करते ही हैं, अक्सर विश्वकोशों के समान संबंधित वस्तु के विषय में भी बताते हैं। इस प्रकार एक अच्छा शब्दकोश दो प्रकार के संदर्भ ग्रंथों यानी विश्वकोश और शब्दकोश का काम देता है।

विद्यार्थी अवस्था से लेकर अंत काल तक शब्दकोश ही एक मात्र ऐसा ग्रंथ है जो कभी भी अनुपयोगी नहीं होता। इसलिए अब पाश्चात्य देशों में शब्दकोशों के 'विश्वकोश' रूप पर तरह-तरह के परिशिष्ट और चित्र आदि देकर निखार पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है और उनके नाम में भी 'विश्वकोश' या 'विश्वकोश संबंधी' शब्द। जैसे एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी जोड़े जाने लगे हैं। यही कारण है कि विदेशों में प्रकाशित शब्दकोश शब्दों के अर्थ जानने के अलावा अन्य प्रकार की सूचनाओं के लिए भी उपयोगी बन जाते हैं। जिन शब्दकोशों में शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने और उनकी प्राचीनता का प्रमाण देने के लिए उद्धरण भी दिए जाते हैं, उनका उपयोग किसी उद्धरण का सूत्र मालूम करने के लिए भी किया जा सकता है। कुछ शब्दकोशों में प्रसिद्ध विद्वानों, लेखकों, राजनीतिज्ञों आदि के उद्धरण भी शब्दों के अर्थ के साथ दिए रहते हैं। इस प्रकार किसी स्वतंत्र उद्धरण कोश के अभाव में इस प्रकार के शब्दकोश बहुत उपयोगी बन जाते हैं। मगर शब्दकोश तैयार करने और उसके मुद्रण में प्रकाशक और लेखक से जिस सावधानी की अपेक्षा की जाती है, वह भारत में प्रकाशित किसी भी भाषा के शब्दकोश में शायद ही देखने को मिलती है। कभी-कभी प्रकाशक योग्य व्यक्तियों को थोड़ा-सा पारिश्रमिक देकर शब्दकोश तैयार करा लेते हैं और फिर बिना परीक्षण कराए उसे ज्यों का त्यों छाप देते हैं। यह भी देखा गया है कि प्रकाशक नए संस्करण के नाम पर पुराना संस्करण ही बिना किसी संशोधन या परिवर्द्धन के छाप देते हैं। इस कारण पिछले संस्करण में रह गई भूलो का संशोधन तथाकथित नए संस्करण में नहीं हो पाता और न ही उनमें भाषा में प्रचलित हो चुके नए शब्दों का समावेश हो पाता है।

किसी भी शब्दकोश की उपयोगिता जानने के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि उसमें प्रयुक्त भाषा को

परखा जाए। कुछ ऐसे भी शब्दकोश प्रकाशित हुए हैं, जिनका उद्देश्य किसी एक काल या युग के शब्दों के अर्थ देना है। इसलिए वर्तमान काल की भाषा के शब्दों के लिए मध्यकालीन या वैदिक काल की भाषा का कोश उपयोगी नहीं होगा। इसी प्रकार कोई व्यक्ति अगर प्राचीन ऐतिहासिक काल के शब्दों के अर्थ जानने के लिए अधुनातन भाषा का शब्दकोश देखे तो यह उसकी भूल होगी और उसे अपेक्षित सूचना नहीं मिल सकेगी।

कुछ प्रकाशक अपने शब्दकोश के प्रचार के लिए शब्द संख्या की घोषणा भी करते हैं। पर यह बहुत भ्रामक है। इससे यह पता नहीं चलता कि शब्दों की संख्या किस प्रकार आंकी गई है। घोषित या प्रचारित शब्द संख्या में केवल मुख्य शब्दों को शामिल किया गया है या मुख्य शब्दों के अन्य रूपों को भी गिना गया है, मसलन एक आदर्श शब्दकोश में 'पिछ', 'पिछलगा', 'पिछलगी' और 'पिछलग्गू' - को केवल एक शब्द गिना जाएगा। पर कुछ प्रकाशक 'पिछ' जैसे कुछ अन्य शब्दों से निकले रूपों को भी शब्दों की संख्या में शामिल करके शब्द संख्या भ्रमात्मक रूप से बढ़ाकर प्रचारित करते हैं। शब्दों के संबंध में यह भी देखना चाहिए कि कोश में किस प्रकार के शब्द लिए गए हैं। उसमें बोली और उपभाषा के शब्दों के साथ ही प्रचलित और वैज्ञानिक शब्द भी शामिल किए गए हैं या नहीं।

यह भी देखना चाहिए कि कोश में हर शब्द का विवेचन/निरूपण किस प्रकार किया गया है, मसलन शब्द के हिज्जे शुद्ध हैं या अशुद्ध हिज्जे के चयन में किन सिद्धांतों को अपनाया गया है, शब्द के बहुवचन, क्रिया रूप, कृदंत आदि भी दिए गए हैं या नहीं। शब्दों का उच्चारण दिया गया है या नहीं और उच्चारण देने के लिए जो नियम अपनाया गया है वह यथातथ्य और स्पष्ट है या नहीं।

शब्द का इतिहास दिया गया है या नहीं, किसी शब्द के अर्थ में समय-समय पर जो परिवर्तन हुए हैं या होते रहे हैं, उनका उल्लेख है या नहीं, शब्द की परिभाषा स्पष्ट, सही और उपयुक्त है या नहीं, कठिन शब्दों का अर्थ और परिभाषा स्पष्ट करने के लिए उदाहरण और उद्धरण भी दिए गए हैं या नहीं, उद्धरण किस रूप में दिए गए हैं और उद्धरणों का सही-सही संदर्भ दिया गया है या नहीं, क्या संदर्भ कालक्रम से रखे गए हैं और हरेक के साथ समय दिया गया है, ताकि शब्द विशेष का इतिहास भी मालूम हो सके? क्या शब्द के साथ उसका परिचय, जैसे-स्तरीय, अप्रचलित, बोलचाल संबंधी आदि दिया गया है? शब्द के पर्यायवाची और विलोम भी दिए गए हैं या नहीं? शब्द के साथ विश्वकोश के समान सूचना दी गई है या नहीं?

यूरोपीय भाषाओं के अच्छे शब्दकोशों में आमतौर पर शब्दों की परिभाषा या समानार्थी शब्दों के अलावा कुछ और महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सूचनाएँ भी दी रहती है। इस प्रकार के बड़े शब्दकोशों में कुछ सूचनाएँ विश्वकोश की शैली में होती है। कुछ शब्दकोशों में उद्धरण भी खूब दिए रहते हैं, जिनका उपयोग विदेशी उद्धरण कोश के पूरक के रूप में किया जा सकता है। कुछ शब्दकोशों में अप्रचलित शब्द और स्थानीय प्रयोग में आने वाले शब्द अलग से दिए रहते हैं। इसलिए स्थानीय इतिहास, आचार-विचार, लोक-व्यवहार आदि की थोड़ी-बहुत जानकारी के लिए भी ये उपयोगी होते हैं।

हिन्दी का विश्वकोश :

इंटरनेट पर हिन्दी का विश्वकोश (इन्साइक्लोपीडिया) भी उपलब्ध है, ये विश्वकोष हिन्दी की सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक नागरी प्रचारिणी सभा ने तैयार किया था। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने इसे इंटरनेट पर स्थापित किया है । यदि आप कार्य शब्द तालाश रहे है तो भारत-कोश नामक पोर्टल को जरूर देखे। इसका उद्देश्य भारत के संबंध में हिन्दी में एक समग्र ज्ञानकोश उपलब्ध कराना है।

इंटरनेट पर हिन्दी का विश्वकोश (इन्साइक्लोपेडिया) भी उपलब्ध है। ये विश्वकोष हिन्दी की सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक नागरी प्रचारिणी सभा ने तैयार किया था। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा ने इसे इंटरनेट पर स्थापित कराने में सहायता की है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) शब्दकोश किसे कहते हैं ?

(2) शब्दकोश में किस तरह की जानकारी होती है ?

(3) शब्दकोश का उपयोग क्यों किया जाता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) विश्वकोश किसे कहते हैं ?

(2) ज्ञानकोश किसे कहते हैं ?

(3) विश्वकोश का उपयोग बताइए ।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी प्रवृत्ति

उपलब्ध किसी शब्दकोश या विश्वकोश या ज्ञानकोश के अपनी पसंद से कुछ शब्द चुनकर उनकी सूची अर्थ सहित तैयार कीजिए।

शिक्षक प्रवृत्ति

किसी उपलब्ध शब्दकोश या विश्वकोश या ज्ञानकोश को विद्यार्थियों को दिखाकर उसकी उपयोगिता समझाइए।

⊙